

तम-खण्डन दीप जगाय, धारों तुम आगै ।  
 सब तिमिर मोहक्षय जाय, ज्ञान-कला जागै ॥  
 चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द-कन्द सही ।  
 पद जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष-मही ॥  
 ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 दशगन्ध हुताशन माहिं, हे प्रभु! खेवत हों ।  
 मिस-धूम करम जर जाहिं, तुम पद सेवत हों ॥चौबीसों॥  
 ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 शुचि पक्व सुरस फल सार, सब ऋतु के लियायो ।  
 देखत दृग-मनको प्यार, पूजत सुख पायो ॥चौबीसों॥  
 ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ्य करें ।  
 तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ॥चौबीसों॥  
 ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

## जयमाला

(दोहा)

श्रीमत तीरथनाथ-पद, माथ नाथ हित हेत ।  
 गाऊँ गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत ॥

(त्रिभंगी)

जय भव-तम भंजन, जन-मन-कंजन, रंजन दिन-मनि, स्वच्छ करा ।  
 शिव-मग-परकाशक, अरिगण-नाशक, चौबीसों जिनराज वरा ॥

(पद्धरि)

जय ऋषभदेव रिषि-गन नमन्त, जय अजित जीत वसु-अरि तुरन्त ।  
 जय सम्भव भव-भय करत चूर, जय अभिनन्दन आनन्द-पूर ॥  
 जय सुमति सुमति-दायक दयाल, जय पद्म पद्म द्युति तनरसाल ।  
 जय जय सुपार्श्व भव-पास नाश, जय चन्द, चन्द-तनद्युति प्रकाश ॥  
 जय पुष्पदन्त द्युति-दन्त-सेत, जय शीतल शीतल-गुननिकेत ।  
 जय श्रेयनाथ नुत-सहस्रभुज्ज, जय वासव-पूजित वासुपुज्ज ॥